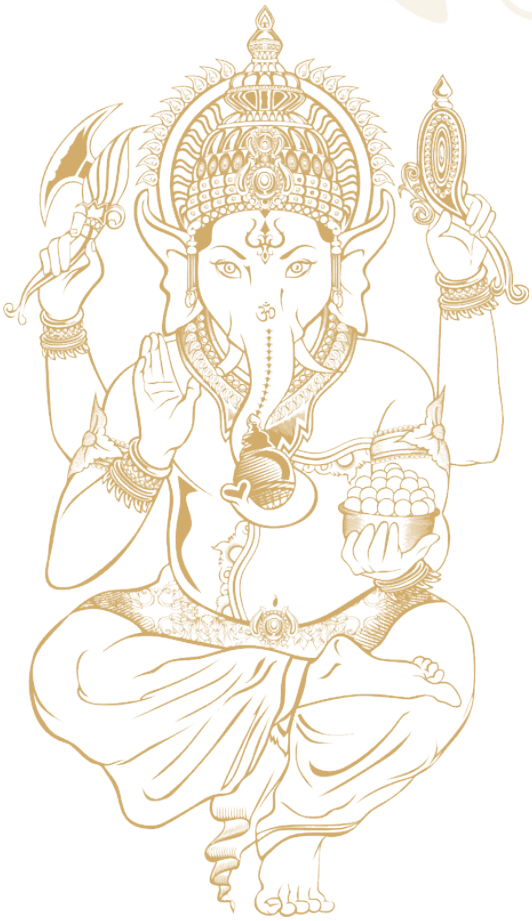

Mr. Aadya

31 Oct 2024

01:52 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119927201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**30-31/10/2024**
दिन	बुध-गुरुवार
जन्म समय	**01:52:00 घंटे**
इष्ट	48:19:33 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	01:30:52 घंटे
वेलान्तर	00:16:24 घंटे
साम्पातिक काल	04:09:25 घंटे
सूर्योदय	06:32:10 घंटे
सूर्यास्त	17:37:13 घंटे
दिनमान	11:05:03 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	13:42:05 तुला
लग्न के अंश	11:32:55 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**चित्रा - 1**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	विष्कुम्भ
करण	विष्टि
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पे-पैनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1946	कार्तिक	9
पंजाबी	संवत : 2081	कार्तिक	15
बंगाली	सन् : 1431	कार्तिक	14
तमिल	संवत : 2081	आइपसी	15
केरल	कोल्लम : 1200	तुलम	15
नेपाली	संवत : 2081	कार्तिक	15
चैत्रादि	संवत : 2081	कार्तिक	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2081	आश्विन	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 13
तिथि समाप्ति काल _____: 13:15:46
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: हस्त
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:43:18 घंटे
जन्म योग _____: चित्रा
सूर्योदय कालीन योग ____: वैधृति
योग समाप्ति काल _____: 08:50:46 घंटे
जन्म योग _____: विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण ____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 13:15:46 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 10:21:44
भभोग _____: 67:32:42
भोग्य दशा काल _____: मंगल 5 वर्ष 11 मा 4 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

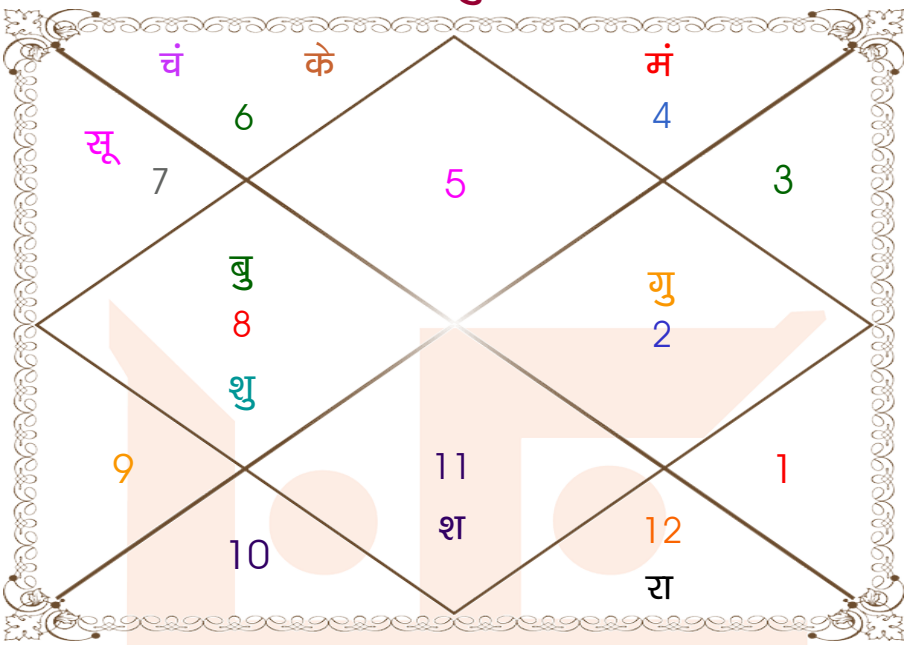

चन्द्र कुंडली

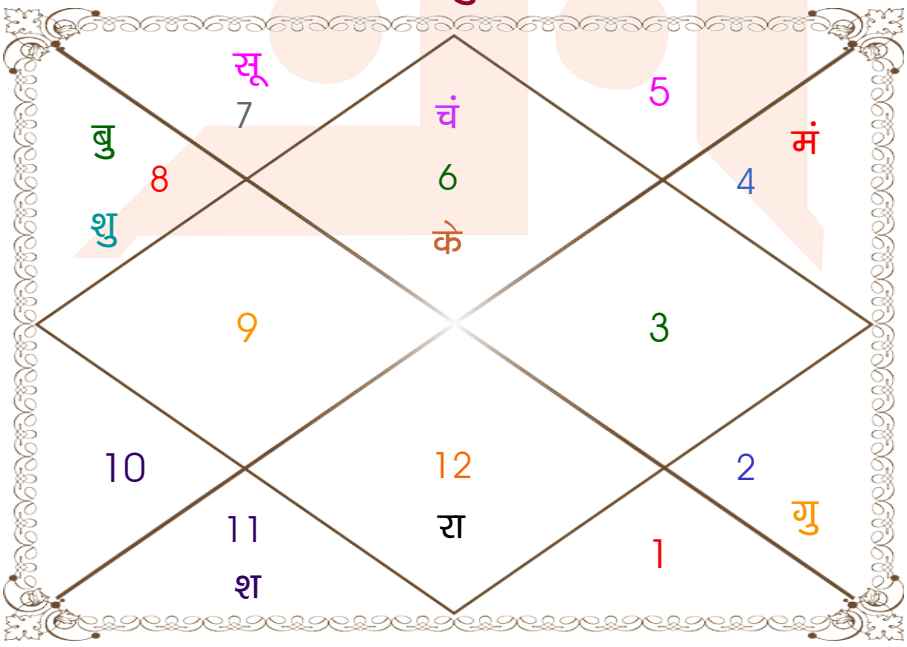

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

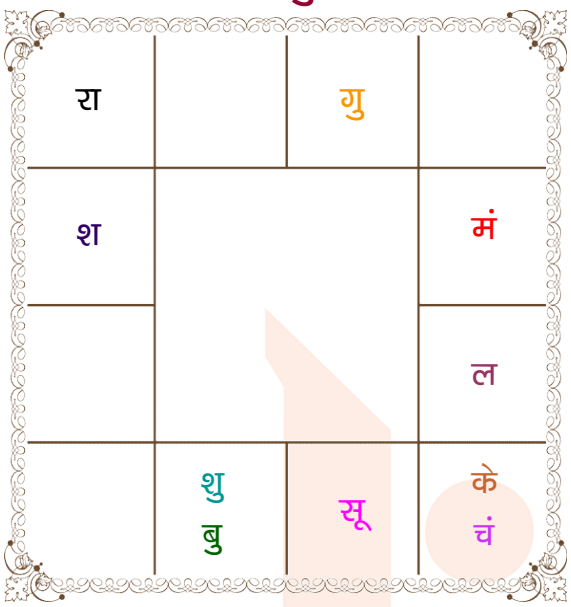

लग्न कुंडली

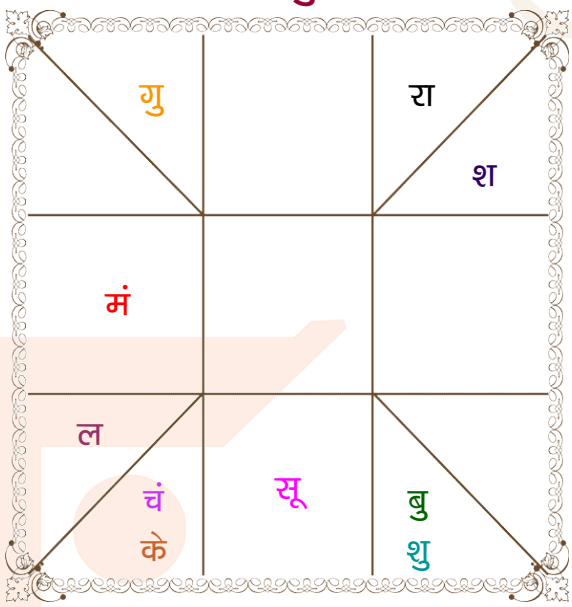

विंशोत्तरी
मंगल 5वर्ष 11मा 4दि

मंगल

31/10/2024

06/10/2143

मंगल	05/10/2030
राहु	05/10/2048
गुरु	05/10/2064
शनि	05/10/2083
बुध	06/10/2100
केतु	06/10/2107
शुक्र	06/10/2127
सूर्य	06/10/2133
चन्द्र	06/10/2143

योगिनी
मंगला 0वर्ष 10मा 5दि

पिंगला

05/09/2025

05/09/2027

पिंगला	16/10/2025
धान्या	15/12/2025
भ्रामरी	07/03/2026
भद्रिका	16/06/2026
उल्का	16/10/2026
सिद्धा	07/03/2027
संकटा	16/08/2027
मंगला	05/09/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	11:32:55	313:59:26	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	---
सूर्य			तुला	13:42:05	01:00:00	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	नीच राशि
चंद्र			कन्या	25:22:22	11:48:51	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	मित्र राशि
मंगल			कर्क	04:15:07	00:22:21	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	नीच राशि
बुध			वृश्चि	01:37:41	01:25:43	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	सम राशि
गुरु	व		वृष	26:21:49	00:04:14	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			वृश्चि	21:31:04	01:12:08	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	सम राशि
शनि	व		कुंभ	18:42:19	00:01:38	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	मूलत्रिकोण
राहु	व		मीन	12:16:28	00:01:43	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगल	सम राशि
केतु	व		कन्या	12:16:28	00:01:43	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	01:44:33	00:02:20	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	---
नेप	व		मीन	03:19:13	00:01:10	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
प्लूटो			मक	05:31:25	00:00:33	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			वृष	10:07:50	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:12:11

लग्न-चलित

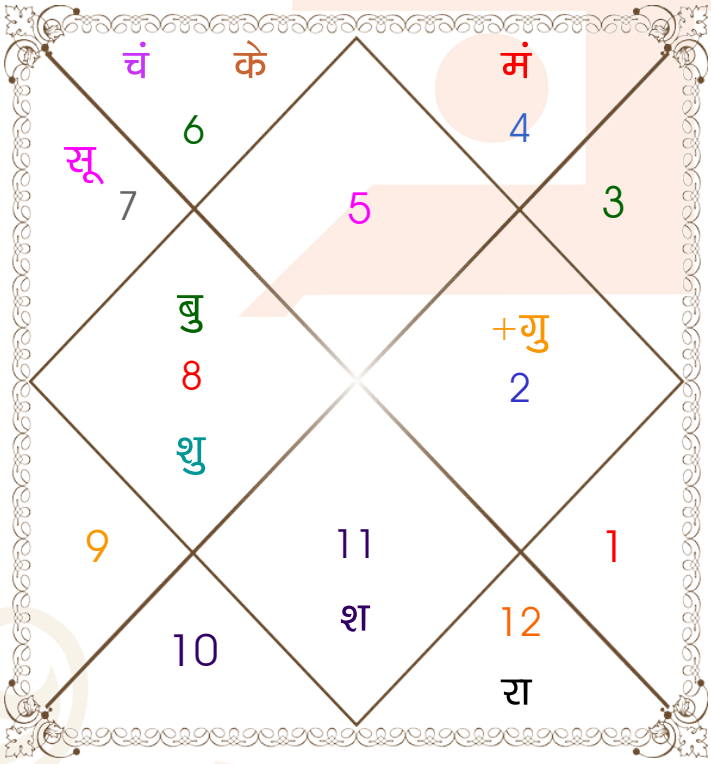

चन्द्र कुंडली

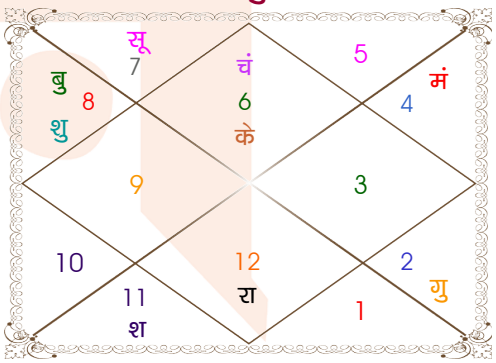

नवमांश कुंडली

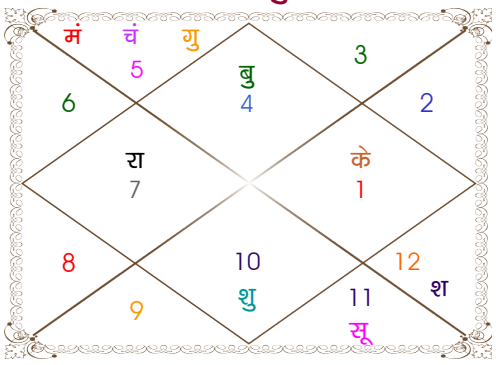

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	26:18:45	सिंह	11:32:55
2	सिंह	26:18:45	कन्या	11:04:34
3	कन्या	25:50:23	तुला	10:36:12
4	तुला	25:22:01	वृश्चिक	10:07:50
5	वृश्चिक	25:22:01	धनु	10:36:12
6	धनु	25:50:23	मकर	11:04:34
7	मकर	26:18:45	कुम्भ	11:32:55
8	कुम्भ	26:18:45	मीन	11:04:34
9	मीन	25:50:23	मेष	10:36:12
10	मेष	25:22:01	वृष	10:07:50
11	वृष	25:22:01	मिथुन	10:36:12
12	मिथुन	25:50:23	कर्क	11:04:34

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	11:32:55
2	कन्या	08:00:52
3	तुला	08:03:53
4	वृश्चिक	10:07:50
5	धनु	12:07:22
6	मकर	12:47:18
7	कुम्भ	11:32:55
8	मीन	08:00:52
9	मेष	08:03:53
10	वृष	10:07:50
11	मिथुन	12:07:22
12	कर्क	12:47:18

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

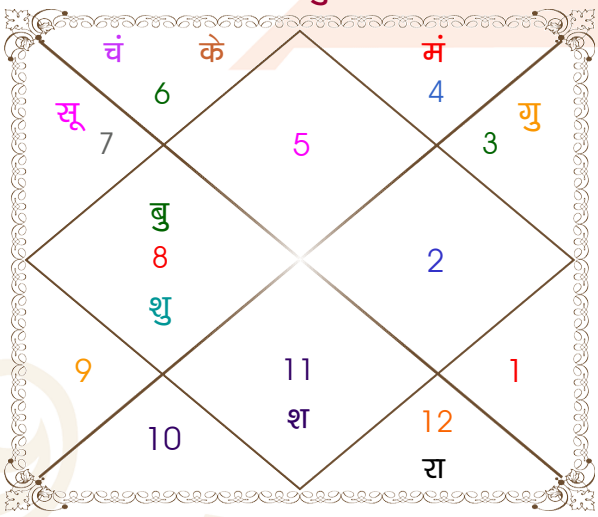

भाव कुंडली

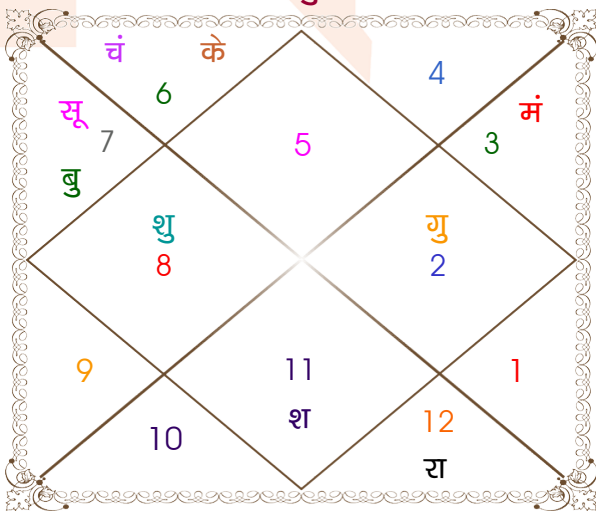

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 11 मास 4 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
31/10/2024		05/10/2030		05/10/2048		05/10/2064		05/10/2083	
05/10/2030		05/10/2048		05/10/2064		05/10/2083		06/10/2100	
	31/10/2024	राहु	17/06/2033	गुरु	23/11/2050	शनि	09/10/2067	बुध	03/03/2086
राहु	21/03/2025	गुरु	11/11/2035	शनि	05/06/2053	बुध	18/06/2070	केतु	28/02/2087
गुरु	25/02/2026	शनि	17/09/2038	बुध	11/09/2055	केतु	27/07/2071	शुक्र	29/12/2089
शनि	06/04/2027	बुध	05/04/2041	केतु	17/08/2056	शुक्र	26/09/2074	सूर्य	05/11/2090
बुध	02/04/2028	केतु	24/04/2042	शुक्र	18/04/2059	सूर्य	08/09/2075	चंद्र	05/04/2092
केतु	29/08/2028	शुक्र	24/04/2045	सूर्य	04/02/2060	चंद्र	08/04/2077	मंगल	02/04/2093
शुक्र	29/10/2029	सूर्य	18/03/2046	चंद्र	05/06/2061	मंगल	18/05/2078	राहु	21/10/2095
सूर्य	06/03/2030	चंद्र	17/09/2047	मंगल	12/05/2062	राहु	24/03/2081	गुरु	26/01/2098
चंद्र	05/10/2030	मंगल	05/10/2048	राहु	05/10/2064	गुरु	05/10/2083	शनि	06/10/2100

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
06/10/2100		06/10/2107		06/10/2127		06/10/2133		06/10/2143	
06/10/2107		06/10/2127		06/10/2133		06/10/2143		00/00/0000	
केतु	04/03/2101	शुक्र	05/02/2111	सूर्य	24/01/2128	चंद्र	06/08/2134	मंगल	04/03/2144
शुक्र	04/05/2102	सूर्य	05/02/2112	चंद्र	25/07/2128	मंगल	07/03/2135	राहु	01/11/2144
सूर्य	09/09/2102	चंद्र	06/10/2113	मंगल	30/11/2128	राहु	05/09/2136		00/00/0000
चंद्र	10/04/2103	मंगल	06/12/2114	राहु	24/10/2129	गुरु	05/01/2138		00/00/0000
मंगल	06/09/2103	राहु	06/12/2117	गुरु	12/08/2130	शनि	07/08/2139		00/00/0000
राहु	24/09/2104	गुरु	06/08/2120	शनि	25/07/2131	बुध	05/01/2141		00/00/0000
गुरु	30/08/2105	शनि	06/10/2123	बुध	31/05/2132	केतु	06/08/2141		00/00/0000
शनि	09/10/2106	बुध	06/08/2126	केतु	06/10/2132	शुक्र	07/04/2143		00/00/0000
बुध	06/10/2107	केतु	06/10/2127	शुक्र	06/10/2133	सूर्य	06/10/2143		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 5 वर्ष 11 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
21/03/2025		25/02/2026		06/04/2027		02/04/2028		29/08/2028	
25/02/2026		06/04/2027		02/04/2028		29/08/2028		29/10/2029	
गुरु	06/05/2025	शनि	30/04/2026	बुध	27/05/2027	केतु	11/04/2028	शुक्र	08/11/2028
शनि	29/06/2025	बुध	27/06/2026	केतु	17/06/2027	शुक्र	06/05/2028	सूर्य	30/11/2028
बुध	16/08/2025	केतु	20/07/2026	शुक्र	17/08/2027	सूर्य	13/05/2028	चंद्र	04/01/2029
केतु	05/09/2025	शुक्र	26/09/2026	सूर्य	04/09/2027	चंद्र	26/05/2028	मंगल	29/01/2029
शुक्र	01/11/2025	सूर्य	16/10/2026	चंद्र	04/10/2027	मंगल	03/06/2028	राहु	03/04/2029
सूर्य	18/11/2025	चंद्र	19/11/2026	मंगल	25/10/2027	राहु	26/06/2028	गुरु	30/05/2029
चंद्र	16/12/2025	मंगल	12/12/2026	राहु	18/12/2027	गुरु	15/07/2028	शनि	05/08/2029
मंगल	05/01/2026	राहु	11/02/2027	गुरु	05/02/2028	शनि	08/08/2028	बुध	04/10/2029
राहु	25/02/2026	गुरु	06/04/2027	शनि	02/04/2028	बुध	29/08/2028	केतु	29/10/2029

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
29/10/2029		06/03/2030		05/10/2030		17/06/2033		11/11/2035	
06/03/2030		05/10/2030		17/06/2033		11/11/2035		17/09/2038	
सूर्य	05/11/2029	चंद्र	24/03/2030	राहु	02/03/2031	गुरु	12/10/2033	शनि	24/04/2036
चंद्र	15/11/2029	मंगल	05/04/2030	गुरु	12/07/2031	शनि	28/02/2034	बुध	18/09/2036
मंगल	23/11/2029	राहु	07/05/2030	शनि	15/12/2031	बुध	02/07/2034	केतु	18/11/2036
राहु	12/12/2029	गुरु	05/06/2030	बुध	03/05/2032	केतु	22/08/2034	शुक्र	11/05/2037
गुरु	29/12/2029	शनि	08/07/2030	केतु	29/06/2032	शुक्र	16/01/2035	सूर्य	02/07/2037
शनि	18/01/2030	बुध	08/08/2030	शुक्र	10/12/2032	सूर्य	28/02/2035	चंद्र	26/09/2037
बुध	05/02/2030	केतु	20/08/2030	सूर्य	29/01/2033	चंद्र	12/05/2035	मंगल	26/11/2037
केतु	13/02/2030	शुक्र	25/09/2030	चंद्र	21/04/2033	मंगल	03/07/2035	राहु	01/05/2038
शुक्र	06/03/2030	सूर्य	05/10/2030	मंगल	17/06/2033	राहु	11/11/2035	गुरु	17/09/2038

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
17/09/2038		05/04/2041		24/04/2042		24/04/2045		18/03/2046	
05/04/2041		24/04/2042		24/04/2045		18/03/2046		17/09/2047	
बुध	27/01/2039	केतु	28/04/2041	शुक्र	24/10/2042	सूर्य	10/05/2045	चंद्र	03/05/2046
केतु	22/03/2039	शुक्र	01/07/2041	सूर्य	17/12/2042	चंद्र	06/06/2045	मंगल	04/06/2046
शुक्र	24/08/2039	सूर्य	20/07/2041	चंद्र	19/03/2043	मंगल	26/06/2045	राहु	25/08/2046
सूर्य	10/10/2039	चंद्र	21/08/2041	मंगल	22/05/2043	राहु	14/08/2045	गुरु	06/11/2046
चंद्र	27/12/2039	मंगल	12/09/2041	राहु	02/11/2043	गुरु	27/09/2045	शनि	01/02/2047
मंगल	19/02/2040	राहु	09/11/2041	गुरु	27/03/2044	शनि	18/11/2045	बुध	20/04/2047
राहु	08/07/2040	गुरु	30/12/2041	शनि	16/09/2044	बुध	03/01/2046	केतु	22/05/2047
गुरु	09/11/2040	शनि	01/03/2042	बुध	19/02/2045	केतु	23/01/2046	शुक्र	21/08/2047
शनि	05/04/2041	बुध	24/04/2042	केतु	24/04/2045	शुक्र	18/03/2046	सूर्य	17/09/2047

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	75%	पराक्रम, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	72%	सुख, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	72%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पुखराज	गुरु	64%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	64%	धन, सुख
मूंगा	मंगल	59%	कम खर्च, भाग्योदय, सुख
मोती	चंद्र	38%	धन हानि, व्यय
गोमेद	राहु	31%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि
नीलम	शनि	7%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग

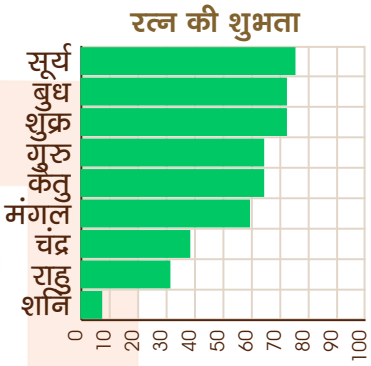

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	05/10/2030	81%	50%	72%	59%	70%	72%	7%	6%	70%
राहु	05/10/2048	62%	12%	44%	72%	64%	78%	19%	53%	52%
गुरु	05/10/2064	81%	50%	66%	59%	77%	59%	7%	31%	64%
शनि	05/10/2083	62%	12%	44%	78%	64%	78%	32%	44%	52%
बुध	06/10/2100	81%	12%	59%	84%	64%	78%	7%	31%	64%
केतु	06/10/2107	62%	12%	66%	72%	64%	78%	0%	6%	77%
शुक्र	06/10/2127	62%	12%	59%	78%	64%	84%	19%	44%	70%
सूर्य	06/10/2133	88%	50%	66%	72%	70%	59%	0%	6%	52%
चंद्र	06/10/2143	81%	56%	59%	78%	64%	72%	7%	6%	52%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
साढेसाती तृतीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति जन्म कुण्डली में द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। अतः यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप शरीर से स्वस्थ रहेंगी तथा समय अधिक व्यय करने वाली महिला होंगी परन्तु आप अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही अधिक व्यय करेंगी। साथ ही अपने जीवन काल में समस्त भोग्य पदार्थों का आनन्द पूर्वक उपभोग करके प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगी। आपके पति भी शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा क्रोधाधिक्य के भाव की प्रबलता रहेगी लेकिन इससे आपके दाम्पत्य जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फल दायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है परन्तु वैवाहिक प्रक्रिया अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद वातावरण में सम्पन्न होगी। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याएं या व्यवधान उत्पन्न नहीं होंगे। साथ ही विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त समस्त प्रकार के भौतिक सुखों तथा सांसारिक भोग्य पदार्थों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। आपके शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे तथा इनसे आपको कोई असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर ही अधिक व्यय करेंगी एवं समस्त भौतिक वस्तुओं का आप सुख पूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगी। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होंगे। मंगल की तृतीय भाव पर दृष्टि आपके पराक्रम में वृद्धि करेगी। जिसके फलस्वरूप समाज में अपना प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगी। आप को भाई बहनों का सुख एवं वांछित

सहयोग भी जीवन में प्राप्त होता रहेगा। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आपके शत्रु हमेशा निर्बल रहेंगे। आपके विरोध करने की उनमें क्षमता नहीं रहेगी। साथ ही आप में रोगाभाव भी रहेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ रहेगी। इसके प्रभाव से उसका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी। इससे आपका दाम्पत्य प्रभावित नहीं होगा तथा आपके आपसी संबंध मधुर एवं प्रगाढ़ रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसे मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिसका शास्त्रीय नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगी तो जीवन में सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में यश अर्जित करेंगी।

जन्म कुण्डली मिलान में पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए तथा जिस युवक के द्वादश भाव में मंगल स्थित हो उसे यदि अत्यावश्यक न हो तो विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए। शेष भावों में मिलान उत्तम रहेगा एवं इसके प्रभाव में वृद्धि होकर शुभ फल भी अधिक मात्रा में होंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा तथा इसमें आपको किसी भी प्रकार से कष्ट या परेशानी नहीं रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर द्वादश भाव में स्थित है।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य ाध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(31/10/2024 - 05/10/2030)

मंगल की महादशा 31/10/2024 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 05/10/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नही होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन

लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याए उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सट्टा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(31/10/2024 - 21/03/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 31/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 31/10/2024 को प्रारंभ होकर 21/03/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप वसीयत, ग्रेच्युटि आदि से धन प्राप्त कर सकते हैं। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धनार्जन हो सकता है। पराविद्या में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में मन लगेगा। भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। धन का संचय होगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। कटु वचन बोलने पर घरेलू शांति भंग हो सकती है।

आपके जीवनसाथी धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे; उनकी अवांछित यात्राएं हो सकती हैं। माता को निवेश से लाभ होगा। भाई-बहनों को धन और सम्मान मिलेंगे; शत्रुओं पर विजयी होंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उत्साह और संकल्पशक्ति उत्तम रहेंगे। परामर्शदाताओं को अचानक लाभ हो सकता है या आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों के धन में वृद्धि होगी।

छोटी-मोटी बीमारी को भी अनदेखा न करें, अन्यथा यह गंभीर रूप धारण कर सकती है। गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, सतनजा और नीले वस्त्रों का दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(21/03/2025 - 25/02/2026)

आपकी मंगल की महादशा 31/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/03/2025 को प्रारंभ होकर 25/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। प्रोन्नति और कार्यों में प्रगति की संभावना है। प्रसिद्ध लोगों से संपर्क हो सकते हैं। शुभ कार्यों के लिए यात्रा होगी, मुकदमे में विजय होगी, व्यापार में कमाई होगी। माता से संबंध मधुर होंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। शत्रुओं पर विजय होगीः चुनाव या स्पर्धा में विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता धन

कमाएंगे, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी। भाई-बहनों को अचानक फ़ायदा हो सकता है, परिवर्तन आएंगे, यात्रा और खर्चे का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धा में सफलता मिलेगी, शत्रुओं पर विजय मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, हल्दी और चने की दाल दान में दें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(25/02/2026 - 06/04/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 31/10/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/02/2026 को प्रारंभ होकर 06/04/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपकी योग्यता की प्रशंसा होगी, प्रोन्नति हो सकती है। उच्च पद मिल सकता है। आप महत्वाकांक्षी और कूटनीतिज्ञ रहेंगे और सम्मान प्राप्त करेंगे। यात्राएं हो सकती हैं और विदेश से लाभ संभव है। विवाह हो सकता है। आप प्रत्येक कार्य में धैर्य और सावधानी का परिचय देंगे। सुविधाओं में वृद्धि होगी, अचल संपत्ति प्राप्त होगी। माता के साथ संबंध उत्तम रहेंगे। घर में शांति रहेगी।

आपके जीवनसाथी को धन और उच्चपद की प्राप्ति होगी। व्यापार के लाभ में वृद्धि होगी। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी, वाहन सुख, सफलता और धन का संकेत है। आपकी माता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी, सब सुविधाएं रहेंगी, जायदाद से आमदनी होगी। आपके भाई-बहन बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश से लाभार्जन करेंगे। बड़े भाई-बहनों की यात्रा होगी, संतान से सुख मिलेगा।

आपकी संतान को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता और व्यापारी अधिक सक्रिय होंगे, लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। खानपान में परहेज रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ढ\जतवैतपदहेण्च्संदमजडंदजतैंउंसस;6द्धझ

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(06/04/2027 - 02/04/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 31/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 06/04/2027 को प्रारंभ होकर 02/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में घरेलू सुख और समृद्धि का योग है। आप जमीन, जायदाद प्राप्त कर सकते हैं; वाहन सुख मिलेगा। आपके बहुत से मित्र होंगे। घर में सब सुख-सुविधाएं रहेंगी, निवास उत्तम होगा। विरासत या पिता द्वारा लाभ मिलेगा। बहुत से मित्र होंगे। घर में सब सुख-सुविधाएं रहेंगी, निवास उत्तम होगा। विरासत या पिता द्वारा लाभ मिलेगा। ज्योतिष आदि पराविद्या से लाभ हो सकता है। कार्यों में सफलता मिलेगी, शत्रु परास्त होंगे, धन कमाएंगे, साख में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; समाज में उच्च स्थान रहेगा।

आपके जीवनसाथी कार्य में सफल रहेंगे। पिता उच्चपद पर आसीन होंगे; धन प्राप्त करेंगे। माता धनी होंगी, घरेलू सुख मिलेगा। आपके भाई-बहन बुद्धि द्वारा धन कमाएंगे, घरेलू सुख प्राप्त करेंगे, सरकार से लाभ होगा, शत्रुओं पर विजय होगी, सम्मान मिलेगा।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय पाने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो खर्चे अधिक होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं को विदेश से लाभ हो सकता है। व्यापारी लाभ प्राप्त करेंगे, उनकी साख बढ़ेगी।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए हरे वस्त्र, मिश्री, कपूर का दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(02/04/2028 - 29/08/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 31/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/04/2028 को प्रारंभ होकर 29/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप धन कमाएंगे। परिवार से संबंध मधुर रहेंगे। खुशियां मिलेंगी। कटु वचन बोलने से बचें। अगर शिक्षारत हैं तो पढ़ाई में मन लगायें, वर्ना शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ हो सकता है। आप में अंतर्ज्ञान शक्ति मौजूद है। परिवार के सदस्यों से उत्तम संबंध बनाए रखने के लिए प्रयास आवश्यक हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके

पिता की इच्छाशक्ति दृढ़ होगी और वे लक्ष्य प्राप्त करेंगे। माता के सम्मान में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, धनहानि संभव है, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, शिक्षा उत्तम रहेगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को पहले किये हुए निवेश से लाभ मिलेगा। व्यापारियों को लाभकारी अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं।

नेत्र, पाचनतंत्र और मुख के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, कंबल और सतनजा दान में दें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(29/08/2028 - 29/10/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 31/10/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 29/08/2028 को प्रारंभ होकर 29/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। अचल संपत्ति, आभूषण और वाहन प्राप्त होंगे। परिवारजनों और मित्रों से संबंध मधुर रहेंगे। किस्मत साथ देगी। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। घरेलू सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। प्रसन्नतादायक यात्राएं होंगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, धन का लाभ होगा, मित्र सहायता करेंगे। जीवन सुख से कटेगा।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। पिता को साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। वे प्रसन्न रहेंगे और अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता सौभाग्यशाली होंगी, घरेलू जीवन सुखी रहेगा और समाज में उच्च स्थान होगा। आपके भाई-बहनों को विभिन्न माध्यमों से धन प्राप्त होगा, पारिवारिक जीवन अच्छा होगा, प्रतिद्वंद्वियों पर विजयी होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

आपकी संतान को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(29/10/2029 - 06/03/2030)

आपकी मंगल की महादशा 31/10/2024 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 29/10/2029 को प्रारंभ होकर 06/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। साहित्य और दूरदर्शन आदि से लाभ हो सकता है। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। अगर आप बेरोज़गार हैं तो काम मिल सकता है या कोई व्यापार प्रांरभ कर सकते हैं। भाग्य मध्यम रहेगा। धार्मिक या शैक्षणिक कार्यों के लिए यात्राएं हो सकती हैं। संतो की सेवा करेंगे। सब सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे।

आपके भाई-बहनों का भाग्य उत्तम रहेगा। आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा, किस्मत साथ देगी। पिता को साझेदारों से लाभ होगा। आपकी माता का शुभकार्यों पर धन खर्च हो सकता है। उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी संतान की शिक्षा-दीक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो भाग्य उत्तम रहेगा, धन और यात्रा का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन और अप्रत्याशित खुशी मिलने की संभावना है। परामर्शदाता प्रतिद्वंद्वियों से आगे निकलेंगे, जबकि व्यापारीगण धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान और गले के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।